RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

छत्तीसगढ़ के गोंड जनजाति में गोदना कला के स्वरुप में परिवर्तन का अध्ययनः सरगुजा जिले के संदर्भ में

[1]बैनर्जी, शिप्रा, *[2]ताम्रकार, ऋचा

[1]सहायक प्राध्यापक, गृह विज्ञान विभाग, शास. दू.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।
[2]शोध छात्रा, गृह विज्ञान विभाग, शास. दू.ब. महिला महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत।

ARTICLE DETAILS
Article History
Published Online: 15 April 2019

Keywords
गोदना, गोंड जनजाति, वस्त्र

***Corresponding Author**
Email: richa10tamrakar[at]gmail.com

ABSTRACT
गोदना छत्तीसगढ़ की एक पारंपरिक लोक कला है। जनजातीय संस्कृति में विभिन्न अंगो के लिये धातु के आभूषण तो इसमें प्रचलित हैं ही, चित्राकृतियों का अलंकरण भी विद्यमान है। इस अलंकरण को जन सामान्य की भाषा में 'गोदना' कहा जाता है। इस कला में विभिन्न आकृतियों को स्थायी रूप से शरीर पर अंकित किया जाता है। जनजातीय जीवन में, गोदना शारीरिक सुंदरता के साथ ही साथ कई सामाजिक व आध्यात्मिक कारणों के लिये बनवाया जाता है। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में गोड़ जनजाति की महिलाओं द्वारा अब कपड़ो पर भी गोदना की आकृतियां बनाया जाने लगा है। प्रस्तुत अध्ययन में गोदना के स्वरूप के इसी परिवर्तन के बारे में अध्ययन किया गया है तथा यह पाया गया कि इस प्रकार गोदना कला का अनुप्रयोग करने से इस कला को संरक्षण तो प्राप्त हो ही रहा है साथ ही साथ नवीनता व लाकप्रियता भी प्राप्त हो रही है।

1. परिचय

विश्व में विभिन्न कलाएँ प्रचलित हैं। मानव सभ्यता के विकास के साथ ही विश्व में कई ऐसी कलाओ ने जन्म लिया जिनके द्वारा मानवीय जीवन सुलभ और सौन्दर्य पूर्ण हो गया।

भारत प्राचीनकाल से ही लोकशिल्पों व कलाओं का धनी रहा है। भारत के विभिन्न समुदायों में कला की कई परंपराए प्राचीनकाल से ही पल्लवित–पुष्पित संवर्धित और संरक्षित होती आयी हैं। जातीय तथा जनजातीय समुदाय की यह परंपराए आकर्षक व विविधताओं से भरी है।

परिवेश व समय के अनुसार कलाओं और शिल्पों में समयानुसार परिवर्तन आते गया है। गोदना कला भी जनजातीय संस्कृति की प्रमुख कला है। जनजातियों के जीवन में गोदना का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।

1.1 गोदना का अर्थ

गोदना का शाब्दिक अर्थ है 'चुभोना' । शरीर के किसी अंग में स्थायी रूप से अंकित की गयी आकृति को गोदना कहा जाता है। व इस कला को गोदना कला कहा जाता है। आजकल जो शरीर पर टैटु बनवाते है वह इस पारंपरिक कला का ही रूप है।

1.2 इतिहास

विभिन्न संस्कृतिया के इतिहास मे टैटु व गोदना का उल्लेख पाया जाता है। पिछली कई शताब्दियों से मानव शरीर पर टैटु (गोदना) बनवाते आ रहा है। 6000 BCE से गोदना का उल्लेख प्राप्त होता है। फ्रांस व पर्तगाल की गुफाओं में टैटु के साथ मानव की आकृतियां दिखाई देती हैं।

सबसे प्राचीन मानव शरीर जिसमें टैटु पाया गया वह "Iceman" का है, जो कि लगभग 5300 वर्ष पुराना हैं जिसे नार्थ इटली के पहाड़ो पर खोजा गया है। पुरातात्विक साक्ष्यों के अनुसार गोदना आज की खोज नही है, अपितु हजारो वर्ष पूर्व से मनुष्य इस कला को जान रहा है।

1.3 छत्तीसगढ में जनजातियां

जनजातीय जनसंख्या के आधार पर विश्व में अफ्रिका के बाद भारत दूसरे स्थान पर आता है। छत्तीसगढ़ भारत का एक जनजातीय बहुल राज्य हैं। छत्तीसगढ में घोषित 42 अनुसूचित जनजाति समूह है। यहाँ मुख्यतः गोंड, हल्बा, मारिया, मुरिया, बैगा, कमार, कोरवां, उरांव आदि जनजातियां निवास करती है। छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में सरगुजा जिला है जहॉ मुख्यतः गोंड जनजाति निवास करती है।

जनजातियों का प्रमुख श्रृंगार गोदना होता है। यहां गोदना एक लोक संस्कार है। इनका मानना होता है कि किसी महिला ने गोदना श्रृंगार नहीं किया तो मृत्योपरांत उन्हें यमलोक मे अधिक कष्ट होगा। गोदना उनका ऐसा आभूषण है जो मृत्योपरांत भी उनके साथ जायेगा। जनजातीय लोग केवल श्रृंगार के लिये ही गोदना नही बनवाते बल्कि गोदना का इनके जीवन मे महत्वपूर्ण संस्कृति सामाजिक व स्वास्थगत महत्व होता है।

स्वास्थ की दृष्टि से गोदना के कारण स्त्रियों को गठिया रोग नहीं होता। इनके अनुसार कई बुरी शक्तियों से गोदना उनकी रक्षा करती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आधुनिकता व बदलते समयानुसार गोदना कला के स्वरूप में बहुत परिवर्तन आया है। पहले जहां गोदना सिर्फ शरीर पर बनवाया जाता था किंतु आजकल लोगो में पारम्परिक गोदना बनवाने का प्रचलन कम होता जा रहा है इसलिये सरगुजा जिले की गोंड जनजाति की महिलाएं गोदना की आकृतियों व डिजाइन को वस्त्र पर उकेरने लगी हैं।

प्रस्तुत शोधपत्र में गोदना के शरीर से वस्त्रों में रूपान्तरण के बारे में अध्ययन किया गया है। व इसके बारे में जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया गया है।

2. उद्देश्य

- छत्तीसगढ़ के गोंड जनजातियों द्वारा बनाये गये वस्त्रों के बारे में लोगो में जागरूकता लाना।
- गोदना कला के स्वरूप में किस प्रकार परिवर्तन हुआ है, उसका अध्ययन करना।

3. सीमाएँ

- गोंड जनजातियों में ही गोदना का अध्ययन किया गया है।
- सरगुजा जिले को ही अध्ययन में शामिल किया गया है।

4.साहित्य का पुनरावलोकन

- **कुमावत, ज्योति (2018)** का अध्ययन राजस्थान के वस्त्र अलंकरण तकनीक 'बांधनी' के 'लहरिया' वस्त्रों पर आधारित है। इन्होने लिखा है कि कई साहित्य ग्रंथों और रचनाओं के अध्ययन से हमें राजस्थान के इन वस्त्रों के ऐतिहासिक एवं तकनिकी पक्ष का ज्ञान तो होता है किन्तु षायद ही कोई ऐसा अध्ययन होगा जिसमें इन विधा में कार्य करने वाले मुस्लिम कलाकारों के बारे में जानकारी प्राप्त हो। इस षोध पत्र में रंगाई– छपाई के कार्य में संलेग्न मुस्लिम कलाकारों के नामोल्लेख एवं संक्षिप्त परिचय देने का प्रयास किया गया है। इन्होने पाया कि मुस्लिम कलाकार अपनी इस विधा को बनाये रखने के लिये निरंतर संघर्षरत है। उन्हे राज्य स्तरीय व राष्ट्रीय सम्मान तो प्राप्त हुये हैं, परन्तु एक बड़ा तबका अभी भी कारिगरी के गलियों में अंधेरे में हैं। उन कलाकारों को वह ध्यानाकर्षण नहीं मिल पा रहा है जिसके वे हकदार हैं।
- **प्रेमी, जे.के. एवं देव, ए. (2016)** – इनके षोध प्रपत्र में इन्होने छत्तीसगढ़ के गरियाबंद जिले के भूंजिया जनजाति में कला एवं गोदना पर मानववैज्ञानिक अध्ययन किया। इन्होने पाया कि गोदना का सौंदर्यात्मक एवं धार्मिक महत्व है। भूंजिया जनजाति की नयी पीढ़ि गोदना के आध्यात्मिक व धार्मिक बोध को महत्व नहीं दे रहे हैं एवं भूला रहें हैं। वे अपने षरीर पर गोदना नहीं बनवाना चाहते हैं। वृद्ध महिलाएं गोदना बनवाती हैं किन्तु उसका अर्थ एवं महत्व नहीं जानती हैं।
- **सेठ, एम. के. एवं भटनागर, पी. (2016)** के अनुसार आज के समय में टेक्सटाइल डिजाइनिंग को पारंपरिक कला के नमूनों का प्रयोग किया जाना चाहीये, ताकि ऐतिहासिक नमूने आज के समय में जीवन्त रहें। अध्ययन में आगरा के मुगल जाली डिजाइन का प्रयोग विभिन्न टेक्सटाइल उत्पाद में कढ़ाई व प्रिंटिंग के माध्यम से किया गया व पाया कि जाली डिजाइन के द्वारा बहुत ही आकर्षक डिजाइन कपड़ो पर बनाया जा सकता है।
- **पाण्डे, अनील कुमार (2016)** :– इन्होने बैगा जनजाति में गोदना परंपरा पर अध्ययन किया है। इन्होने अपने अध्ययन में पाया कि वर्तमान में इस कला का व्यवसायीकरण हो गया है। बैगा जनजाति की गोदना परंपराएं अमिट परंपरागत संचार के रूप में आज भी प्रासंगिक हैं, लेकिन वर्तमान में बदलते सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक परिवेष के चलते बैगा जनजातीय समुदाय में गोदना कला के प्रति पहले जैसा उत्साह नहीं है। इनका कहना है इन्ही सभी कारणो से बैगा जनजातिय समुदाय की गोदना परंपरा को सहेजना सही मायनों में बैगा समुदाय के संस्कारों तथा सांस्कृतिक अस्मिता को सहेजने जैसा होगा।
- **Ela M. Dedhia and Neera Barooah (2015)** :– उन्होंने जनजातिय वस्त्र (Tribal Textile) पर अध्ययन किया है अध्ययन में उन्होंने पाया कि आदिवासी जो वस्त्र जिस तरह बनाते है उनमें उनकी मान्यताओं, संस्कृति व प्रकृति से उनके जुड़ाव देखने को मिलता है। उनके नमूनों (Motif) के रंग, आकृति, उनका व्यवस्थापन सब क एक अर्थ होता है। उनकी अधिकांश डिजाइन ज्यामितिय आकृतियों से बने होते हैं। अध्ययन में पाया गया कि उनके जो मोटिफ या डिजाइन होते है वे उनकी मान्यताओ, जीवन शैली व प्रकृति से प्रेरित रहते हैं।
- **नुरुती, बंसो (2011)** – इन्होने अपने शोध प्रपत्र में बताया कि छत्तीसगढ़ की सुदूर दक्षिण में स्थित बस्तर आदिवासी बाहुल्य जिला है। यहां पर निवास करने वाली जनजातियां अपनी रीति – रिवाजों, आस्थाओं, संस्कृति के लिये प्रसिद्ध रहा है।
- **षांडिल्य, महेषचंद्र (2009)** ने कोरकू गोदना परंपरा पर केंद्रित अपने आलेख में गोदना कला के उद्गम से अब तक के विकास को परिवर्तनों के साथ विष्लेषित किया। कोरकू परंपरा में गोदने आकृति तथा उसके संकेतार्थ के बारे में बतलाया है। कोरकू हाथ की

पटलियों पर 'चिल्लुड़ि' और 'ढांढल' नृत्य करती हुयी आकृतियां उकेरते हैं, जो उनका पारंपरिक नृत्य है। ऐसी आकृतियां गुहा चित्रों में भी प्राप्त हुयी हैं। कोरकू गोदने की आकृतियों में सीतारानी, सीतारसोई, मुकुट, चूल्हा, देवलीरथ, आम, मोर, ढोल, रामलखन, चौपड़,ऊंट आदि प्रमुख हैं।

5.शोधविधि

5.1 शोध प्ररचना

प्रस्तुत शोध पत्र एक लोक कला के बारे में है तथा इसके लिये विवरणात्मक शोध प्ररचना का उपयोग किया गया है। गोदना कला को अब छत्तीसगढ़ की गोड़ महिलाएं वस्त्रों पर बनाने लगी है। गोदना के इसी नये स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है।

5.2 क्षेत्र का चुनाव

प्रस्तुत अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले का चयन किया गया है। यह छत्तीसगढ़ उत्तरी भाग में स्थित है। इसका जिला मुख्यालय अम्बिकापुर है।

Image Source:
https://upload.wikimedia.org/wikipedia/commons/thumb/3/38/India_-_Chhattisgarh_-_Surguja.svg/1200px-India_-_Chhattisgarh_-_Surguja.svg.png

5.3 उपकरण का साधन

यह अध्ययन गुणात्मक तथ्यों पर आधारित है। इसके लिये अवलोक, क्षेत्र भ्रमण, अनुसूची आदि उपकरणो का प्रयोग किया गया है।

5.4 तथ्यों का संकलन

तथ्यों के संकलन हमने होमविसिट, साक्षात्कार, असहभागी अवलोकन, शोधपत्र, छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड के प्रकाशन, छत्तीसगढ़ जनगणना 2011 व जर्नल्स से किया है। हमनें मुख्यतः उनके निवास स्थान पर जाकर गोदना कला का अवलोकन किया व वहां निवासरत गोंड महिलाओं से गोदना कला व इस कला का वस्त्रों पर प्रयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की। गोंड महिलाओं से गोदना बनाने के उद्देश्य को जाना। यह भी उनसे पूछा गया कि आधुनिकता का गोदना पर कैसा प्रभाव पड़ा व उनके द्वारा गोदना की आकृतियों को वस्त्रो पर उकेरना प्रारंम्भ करने का कारण ज्ञात करने का प्रयास किया गया।

6. गोड़ जनजाति के गोदना कलाकारों से संकलित कुछ गोदना की आकृतियां व उनकी जानकारी

गोदना के नमूने	नाम व विवरण
	करेला चानी– यह डिजाइन किशोरावस्था के समय में माथे, गले व बाँह में बनवाया जाता है। इसे क्रोधशांत करने व बुरी नजर से बचाने के लिये बनवाते हैं।
	माछी मुड़ी – यह गोदना विवाह के समय टखने में बनवाया जाता है।
	छाती गोदना – यह शरीर में बनवाने वाला अंतिम गोदना होता है। जब कोई महिला माँ बनने वाली होती है तब इसे महिला के छाती पर इसे बनाया जाता है।
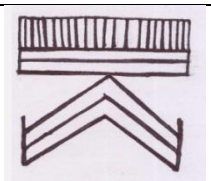	**फुलवारी गोदना** – इसे बाँह, जांघो व पैरो में बनवाया जाता है।
	पर्री बीजा गोदना – यह एक सजावटी गोदना है और हाथ व पैरो पर बनवाया जाता है।
	साथी गोदना – इसे दोनो बाजूओं पर बनवाते हैं, यह गोदना सहभागीता का प्रतिक होता है।

7. विश्लेषण व परिणाम

गोदना जनजातियों की एक पारंपरिक लोक कला है। जो कि जनजातियों के जीवन में वायु की तरह घुला मिला है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है ऐसा माना जाता है। इस परिवर्तन से यह कला भी अछूता नहीं रहा है।

आज के आधुनिकता के दौर में गोदना का भी एक नया स्वरूप देखने को मिलता है, वह है गोदना की आकृतियों का वस्त्रों के अलंकरण में प्रयोग करना। इस अध्ययन में हमने निम्न बिन्दुओं की जानकारी प्राप्त हई।

- जनजातियों के जीवन में गोदना बनवाना एक बहुत ही आवश्यक व प्रतिष्ठा का विषय माना जाता है। परंपरागत रुप से गोदना बनवाने के कई कारण है जैसे शारीरिक सुंदरता, कुल चिन्ह के रुप में, कुछ सामाजिक–आध्यात्मिक मान्यताएं एवं चिकित्सकिय दृष्टिकोण, किन्तु आधुनिकता, सुलभ यातायात के साधन, शहरीकरण, औद्यागिकीकरण, शिक्षा के कारण नयी पीढ़ी का गोदना के पारंपरिक महत्व के प्रति आकर्षण कम होता जा रहा है। वे गोदना बनवाते तो है किन्तु लेकिन जो कलात्मकता उत्साह व पूरे शरीर पर अधिक से अधिक गोदना बनवाने की ललक थी पहले के लोगो में वो आज की पीढ़ी में कम हो गयी है।
- पिछली पिढीयों तथा बुजुर्ग महिलाओं को गोदना की आकृतियों महत्व के बारे में पूर्ण जानकारी है कि किस आकृति का क्या नाम है, किस उम्र में व शरीर के किस अंग में बनवाया जाता है। अलग–अलग आकृतियों का महत्व भी उन्हें ज्ञात है, किन्तु नवयुवतियों को इस बारे में उतना ज्ञान नही है।

चित्र क्र. 1 – गोंड महिला द्वारा पैरों में गोदना बनवाया हुआ।

- गोदना बनाने वाली गोड़ महिलाओं की आजीविका का यह साधन है। वे चावल, हल्दी, तेल, मिर्च, नमक या पैसों के रूप में मेहताना लेकर गोदना बनाने का कार्य करती है, किंतु आज कल गोदना बनवाने के प्रति रूझान कम होने के कारण इनकी आजीवकोपार्जन में भी कमी आने लगी, तो कुछ भ्रमणकर्ताओं द्वारा उन्हें वस्त्रों पर गोदना की आकृति उकेरने की बात कही गयी तो उन्होने वस्त्र जैसे– साड़ी, दुपट्टे, बेडशीट, टेबलक्लाथ आदि पर गोदना बनाना प्रारंभ किया।

चित्र क्र.2 – गोदना षिल्प द्वारा निर्मित साड़ी को प्रदर्शित करती हुयी गोंड महिला।

- छत्तीसगढ़ राज्य शासन द्वारा स्थापित छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड द्वारा इनके बनाये हुए वस्त्रों को शबरी एम्पोरियम द्वारा बिक्री की जाती है व समय समय पर प्रर्दशनी व मेले आयोजित कर इनके उत्पादो की बिक्री की जाती है।
- छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड द्वारा गोदना प्रशिक्षण कार्यशाला आयोजित की जाती है, जिसमें गोदना शिल्प का प्रशिक्षण देने के लिये इन महिलाओं को ट्रेनर के रूप में बुलाया जाता है व उचित मानदेय प्रदान किया जाता है।

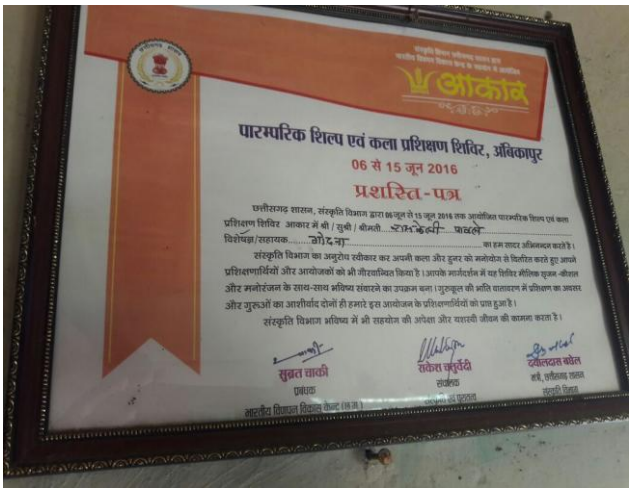

चित्र क्रं. 3 – छत्तीसगढ़ हस्तशिल्प विकास बोर्ड द्वारा गोदना प्रशिक्षक महिला को प्रदान किया गया प्रशस्ति पत्र।

- गोदना के इस नये रूप को ना केवल छत्तीसगढ़ राज्य व राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी विशेष पहचान प्राप्त हुयी है व कई फैशन डिजाइनर व कई कम्पनियां इस कला की ओर आकर्षित हुये हैं व

सरगुजा आकर इस कला को जानने को प्रयास किया है ।

निष्कर्षः–

गोदना एक प्राचीन कला है जिसका उपयोग बहुत ही प्राचीन समय से शरीर की सुंदरता मे वृद्धि हेतु किया जा रहा है। समय व आधुनिकीकरण का प्रभाव इस पर भी पड़ा। छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले की गोंड़ जनजाति की महिलाएं जो गोदना बनाने को कार्य करती थीं, वे शरीर में गोदना बनाने के साथ–साथ वस्त्रों पर भी गोदना की आकृतियां बनाना प्रारम्भ किया है जिससे कि इस कला को संरक्षण, नवीनता एवं प्रसिद्धि प्राप्त हुई है।

References

1. Kamat A. (2012). Handicraft of India: Folk painting. Retrieved
2. from www.kamat.com on July 17, 2014.
3. Kumawat, J. (2018). जहां में मुख्तलिफ राजस्थानी लहरिया, *श्रृंखला एक षोधपरक वैचारिक पत्रिका,* संस्करण – 5(10), 123&126-
4. Premi, J.K. and Deb, A. (2016), Anthropological Prospectives of Art and Tattoo with Special Refference to Bhunjia Tribe of Chhattisgarh, *Indian Journal of Research in Anthropology.* Vol 2(2), 109-114.
5. Pandey, A.K.(2016). " Badalte Parivesh me Baiga Janjatiya Samudaye ki Godna Paramparayen." *Media Mimansa,* July 2016, pp 53-58
6. सेठ, एम. के. एवं भटनागर, पी. (2016). Application of Mughal Jaali Designs of Agra On Textiles A Survey in a Textile Industry. *Intenational Journal of Advanced Research.Vol 4(11). 1736-1748.*
7. Barooah, N. (2015) Symbolism in Tribal textile

RRIJM 2015, All Rights Reserved